1070 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

विश्व पटल पर उभरता भारत

शिप्रा भारती
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
ति0 मा0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर, बिहार।
Email: shipravishwakarma@gmail.com

सारांश

इक्कीसवीं सदी प्रगतिशील देशों के विकास के संघर्ष का युग है। यह काल हर विकासशील देशों के संघर्ष काल के रूप में जाना जाएगा। 19वीं सदी जहाँ ब्रिटेन की थी तो 20वीं सदी अमेरिका की रही। वही 21वीं सदी एशियाई सदी मानी जाएगी, जिसमें 'भारत' के बढ़ते कदम को एक शक्ति के रूप में देखा जाएगा। भारत की लोकतांत्रिक छवि, आय में उच्चवृद्धि तथा बहुस्तरीय विविधता प्रबंधन की योग्यता के मिश्रण को धन्यवाद दिया जाना चाहिए, जिसके कारण आज कई देष भारत को अपना आदर्श मानते हुए उसका अनुसरण करना चाहते है। भारत ने आजादी के बाद जिस तरीके से विकास के चहुँदिशि मार्ग को प्रशस्त किया है। वह निःसंदेह काबिलेतारीफ है।

भारत का उदय परिवर्त्तनकारी रहा है। लंबे समय से भारत विश्व में सर्वोत्कृष्ट दोलक राष्ट्र (जिसके पास विशाल तथा प्रगतिशील अर्थव्यवस्था हो एवं जो अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी क्षमता से अधिक कार्यक्षमता प्रदर्शित करता रहा हो) की स्थिति रही है। राजनीतिक, आर्थिक तथा वित्तीय दृष्टि से विश्व के नए ढांचे को अधिक समावेशी, प्रतिनिधिकात्मक एवं वैध बनाने की मांग में भारत की आवाज अब अधिक मुखर हुई है, जिससे विकासशील विश्व को अब एक विकल्प मिल गया है।

वर्त्तमान में विश्व नेताओं के साथ भारत की बढ़ती सहभागिता और वैश्विक मंचों पर भारत का ध्यानाकर्षण इस बात को सिद्ध करने के अच्छे प्रमाण है।

प्रस्तावना

इस बात में कोई संदेह नहीं कि भारत चतुर्मुखी विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। बदलते भारत की गूंज भारतीय भूगोल को लांघ चुकी है, जिसे पूरा विश्व महसूस कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में विश्व भारत की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है। भारत की लोकतांत्रिक छवि, आय में उच्चवृद्धि तथा बहुस्तरीय विविधता प्रबंधन की योग्यता के मिश्रण को धन्यवाद दिया जाना चाहिए। जिसके कारण आज कई देश भारत को अपना आदर्श मानते हुए उसका अनुसरण करना चाहते है। आज भारत की गिनती न सिर्फ दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में होती है बल्कि विश्व के अधिकतम प्रगतिशील देशों में भी होती है।

भारत को उदय परिवर्तनकारी रहा है। लंबे समय से भारत विश्व में सर्वोत्कृष्ट दोलक राष्ट्र की स्थिति में रहा है। दोलक राष्ट्र की स्थिति वह स्थिति है जिसमें देश के पास विशाल तथा प्रगतिशील अर्थव्यवस्था हो, विभिन्न क्षेत्रों में मुख्य भूमिका हो तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी क्षमता से अधिक कार्य क्षमता प्रदर्शित करता रहा है। आज भारत धीरे–धीरे दोलक राष्ट्र की अपनी भूमिका से विश्व पटल पर एक शक्ति संतुलनकारी देश के बाद विश्व की अग्रणी शक्ति का रूप ले रहा है। अब भारत विश्व समुदाय के समक्ष अपनी बात से कहीं अधिक प्रभावी रूप से रखता हैं। राजनैतिक, आर्थिक तथा वित्तीय दृष्टि से विश्व के नए ढांचे को अधिक समावेशी, प्रतिनिधिकात्मक एवं वैध बनाने की मांग में भारत की आवाज अब अधिक मुखर हुई है।

भारत के उदय से विकासशील विश्व को अब एक विकल्प मिल गया है जो कि बीते कुछ वर्षों में नहीं था। पश्चिमी देशों को भी अब इस बात का आभास है कि उनके परंपरागत उत्तोलनकारी अस्त्र, वैश्विक ढांचे के स्वरूपनिर्धारण में अपना प्रभाव खो चुके है।

वर्त्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वैश्विक मुद्दों में भारत का कद तेजी से बढ़ा हैं। विश्व के नेताओं के साथ भारत की बढ़ती सहभागिता और वैश्विक मंचों पर भारत की ओर ध्यानाकर्षण इस बात को सिद्ध करने के बसे अच्छे प्रमाण है। चाहे जी–20 हो अथवा ब्रिक्स सम्मेलन, जल वायु परिवर्तन अथवा अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय ढांचे से संबंधित शिखर बैठक, भारत के शब्दों का अब पहले से कहीं अधिक महत्व होता हैं। भारत की विदेश नीति में सहयोगात्मक विकास अब एक प्रमुख युक्ति है। ढांचागत निर्माण और आर्थिक उद्यमों को बढ़ावा देने के लिए विश्व भर में ऋण उपलब्ध कराने में भारत तेजी से चीन को पछाड़ने का प्रयास कर रहा है। 2003 से 2014 के बीच भारत द्वारा दस बिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण व्यवस्था प्रदान की गयी है। अब यह 2412 बिलियन डॉलर तक पहुँच चुकी है।

विश्व की प्रगति में भारत एक आर्थिक आधार स्तंम का काम कर रहा है। हार्वड विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय विकास केन्द्र द्वारा कराये गए एक शोध के अनुसार भारत के 7 प्रतिशत की औसत आर्थिक विकास दर के साथ वर्ष 2025 तक विश्व में अग्रणी बने रहने की संभावना है।

एक उभरती महाशक्ति के रूप में भारत के बढ़ते कदम

सबसे युवा जनसंख्या वाला राष्ट्र

भारत दुनिया का दूसरा सबसे आबादी वाला देश है। देश के लिए पी.जी. आज 1.25 है। भारत की आबादी की एक बड़ी संख्या लगभग 50 प्रतिशत 24 वर्ष से कम आयु वर्ग की है। भारतीय विद्वान रंजौल करीम लास्कर के शब्दों में, "जब भूखी आबादी देश के आर्थिक विकास में बाधा डालती है तो भारत युवा ऊर्जा के साथ मिल जाएगा। इसकी उच्च जन्म दर के कारण भारत में सबसे बुजुर्ग राष्ट्रों की तुलना में युवा आबादी है। आने वाले दशकों में जब कुछ शक्तिशाली राष्ट्रों के कार्यबल में कमी देखी जाएगी, भारत एक विकल्प के तौर पर मिलेगा।

हिन्दी सहित अन्य भाषाओं का ज्ञाता

21वीं सदी में अंग्रेजी भाषा का महत्व बहस का विषय है। गैर अंग्रेजी देशों के वक्ताओं

की बढ़ती संख्या ने 6 इसे वैश्विक भाषा के लिए सबसे अच्छा दावेदार बना दिया है। भारत इस पायेदान पर दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है जहाँ लोग अंग्रेजी भाषा के अच्छे एवं सहज जानकार है। भारतीय अंग्रेजी के साथ–साथ डच, इतावली, फ्रेंच, जापानी, कोरियाई, चीनी, रूसी और स्पेनिश भी सीख रहे है।

पड़ोसी देशों के कूटनीतिक संबंध

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य है, 'भारत देश' तथा अब तक राजनीतिक रूप से सफल भी रहा है। विशेष रूप से ध्यानाकर्षण की बात यह हे कि भारत एक लोकतंत्र है, जिसने अन्य लोकतांत्रिक राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों में सुधार किया है और विकसित देशों में अधिकांश देशों के साथ अपने संबंधों में काफी सुधार किया है। भारत ने यूरोपीय संघ, जापान, रूस एवं संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी विश्व शक्तियों के साथ संबंध विकसित किए है। इसने अफ्रीका, अरब विश्व, दक्षिण पूर्व एशिया, इजराइल और दक्षिण अमेरिकी राष्ट्रों (विशेषतः ब्राजील) के साथ अपने संबंधों में प्रगाढ़ता लाई है। पर्यावरण को आर्थिक विकास के लिए अनुकूल बनाने के लिए भारत चीन के साथ निवेश कर रहा है। जिसने इसके पश्चिमी देशों के बीच अपनी छवि को काफी हद तक बढ़ा दिया है और मार्च 2006 में संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ एक असैनिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए है जो विश्व स्तर पर इसे अलग पहचान दिला रहा है। इतना ही नहीं भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (जी–4 राष्ट्रों के हिस्से के रूप में) की स्थायी सदस्यता के लिए भी प्रयत्नशील है लेकिन इसे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस, रूस और यूनाइटेड किंगडम का सर्मथन मिला है हालांकि चीन का स्टैंड अस्पष्ट है।

विश्व में एक उभरती हुए महाशक्ति के रूप में भारत का आकलन करते हुए हमें इतिहास से भी समझने की आवश्यकता है। जहाँ भारत की भूमिका कई मायनों में इसे अलग पहचान दिलाती है। भारत गुट निरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक देशों में से एक था और जिसके संबंध सोवियत संघ एवं पश्चिमी देशों के कई हिस्सों से मधुर थे। इसने बांग्लादेश लिबरेशन बार और श्रीलंका में भारतीय शांति देखभाल बल का उपयोग कर क्षेत्रीय भूमिका अदा की। भारत ने अफ्रीकी और एशियाई देशों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने के लिए भी प्रमुख पहल की इसके साथ ही भारत राष्ट्र मंडल एवं डब्ल्यू. टी.ओ. का एक सक्रिय सदस्य है। वर्त्तमान में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था आर्थिक अनिवार्यताओं से प्रभावित हो रही है।

भारत के वर्तमान आर्थिक विकास (2015 की दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में) ने दुनिया के राजनीतिक मंच पर भारत की स्थित को काफी बेहतर रूप से प्रदर्शित किया है, भारत की गिनती अभी विकासशील देशों में हो रही है परंतु जो मजबूत विकास दिख रहा है उससे कई राष्ट्र भारत के साथ बेहतर संबंध लिए स्थापित कर रहे है। संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद भारत की अर्थव्यवस्था वर्तमान में वास्तविक जी.डी.पी. (पीपीपी) के मामले में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। आई एम एफ की अनुमान से पता चलता है कि 2011, में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। जापानी अर्थव्यवस्था को छोड जी.डी.पी द्वारा पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था। भारत भोजन का चीन के बाद दूसरा

बससे बड़ा उत्पादक देश है, यह प्रतिवर्ष 9 प्रतिशत बढ़ रहा है। वर्तमान में भारत में एक विस्तारित उद्योग है जिसे दुनिया का सर्वोत्कृष्ठ उद्योग माना जा रहा है, वह है सूचना प्रौद्योगिकी। कुछ देशों ने भारत को प्रौद्योगिकी महाशक्ति के रूप में वर्णित करना शुरू कर दिया है जो मुख्यतः अत्यधिक कुशल कम लागत अंग्रेजी बोलने वाले कर्मचारियों के बड़े पूल की उपलब्धता के कारण है। भारत दुनिया के कुछ उन देशों में भी शामिल हो गया है जिसमें भूगर्भीय स्थानांतरण कक्षाओं में उपग्रहों को लांच करने की क्षमता है।

भारत के बढ़ते वैज्ञानिक प्रयास का एक विशिष्ट उदाहरण यह है कि सोवियत संघ और अमेरिका के बाद इसरो नामक राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी को ढूंढकर 1975 में अंतरिक्ष में उपग्रह भेजने वाला चीन और जापान के बाद तीसरा एशियाई राष्ट्र था। अक्टूबर 2008 में भारत ने अपनी पहली मानव रहित चंद्र जांच चंद्रयान–1 जो अग्रस्त 2008 तक संचालित हुआ। इसकी उपलब्धियों में एक उपलब्धि यह भी रही कि इसने चंद्र मिट्टी में पानी के अणुओं की व्यापक उपस्थिति की खोज की थी। 24 सितंबर 2014 को भारत मंगल ग्रह पर केंद्रित उपग्रह भेजने वाला चौथा राष्ट्र बन गया और इसे यह उपलब्धि प्रथम प्रयास में ही मिली जो काफी सराहनीय है। भारत इसके साथ ही अर्न्तराष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं में शामिल होने की भी कोशिश कर रहा है। उदाहरण के लिए, भारत हाल में ही यूरोपीय गैललियो जीपीएस परियोजना और आई टी ई आर फ्यूजन एनर्जी क्लब में शामिल हो गया है। भारत के कुछ शैक्षणिक एवं शोध संस्थान जैसे आई आई एस ई आर, एन आई टी, आई आई टी, बी आई टी एस पिलानी, टी आई एफ आर, आई आई एम, आई आई एस सी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों गिने जाने लगे है।

अब बात अगर ऊर्जा संकटों की करी जाए तो इसमें भी भारत अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। वर्त्तमान में ऊर्जा संकट को कम करने के लिए भारत 9 नागरिक परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों और कई जल विद्युत स्टेशनों का निर्माण कर रहा है। तथा 25 जनवरी 2017 को रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने भारत की यात्रा पर 4 और रिएक्टरों का निर्माण करने की पेशकश की है जो भारत के बढ़ते वैश्विक नेतृत्व में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

विकास में सहायक पर्यटन विभाग

भारतीय सांस्कृतिक विविधता आर्कषक इतिहास, कला संगीत, आध्यात्मिक और सामाजिक मॉडल भारत को उभरते पर्यटन उद्योग विश्व में से अलग ही पहचान दिलाता है ये कुछ ऐसे कारण है जिनके आधार पर भारतीय पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिल रहा है। विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद का मानना है कि अगले दशक में भारत का पर्यटन उद्योग 10 प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ेगा जिससे विकास के मामले में भारत विश्व का नेतृत्व कर सकेगा। पर्यटन भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6 प्रतिशत योगदान देता है और 10 मिलियन लोगों का रोजगार जो भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध साबित हो रहा है।

सेना एवं मिसाइल के क्षेत्र में आत्मनिर्भर

आर्थिक मामलों के बाद अगर हम सैन्य ताकतों की बात करे जो किसी भी राष्ट्र के लिए

काफी महत्वपूर्ण होता है तो हम देखते है भारतीय सेना चीन के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है। भारत के मुख्य रक्षा संगठन में दो मुख्य शाखाएँ शामिल है भारत की मूल सेना और भारतीय अर्धसैनिक बल। भारतीय संयुक्त सशस्त्र बल दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी रक्षा बल है एवं भारतीय अर्धसैनक बल दस लाख से अधिक मजबूत है एवं दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी अर्धसैनिक बल है। भारत की सेना संयुक्त राज्य सेना और चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी सेना है। भारतीय वायु सेना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी वायु सेना है। भारत ने हाल में ही अपने दूसरे स्वदेशी निर्मित लड़ाकू विमान को अपने रक्षा बलों में शामिल किया हैं। भारतीय नौ सेना दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी नौ सेना है।

एकीकृत मार्गदर्शित मिसाइल कार्यक्रम के अर्न्तगत भारत मिसाइल विकास के मामलों में आत्मनिर्भर राष्ट्र बन चुका है। भारत अपने परिष्कृत मिसाइल और अंतरिक्ष कार्यक्रमों के साथ देश में ही लंबी दूरी की परमाणु मिसाइलों के विकास में तकनीकि रूप से सक्षम है। वैलिस्टिक मिसाइलों में भारत का अनुसंधान 1960 में शुरू हुआ। भारत ने जुलाई 1983 में स्वदेशी मिसाइल के बुनियादी ढांचे को विकसित करने के उद्देश्य के साथ समन्वित निर्देशित प्रक्षेपास्त्र विकास कार्यक्रम इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम – आईजीएमडीपी की शुरूआत की जिसके द्वारा देश में निर्मित पहली स्वदेशी बैलिस्टिक मिसाइल थी, पृथ्वी। इसके बाद दूसरी बैलिस्टिक मिसाइल प्रणाली अग्नि मिसाइलों की श्रृंखला है जो भारत की सुरक्षा प्रणाली का बेहद, अहम हिस्सा है। अग्नि मिसाइले भारतीय मिसाइल प्रणाली की रीढ़ है। भारत परमाणु हथियार में भी आत्मनिर्भर राष्ट्र बन चुका है। जिसका श्रेय तत्कालीन वाजपेयी सरकार को जाता है।

भारत वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयतक है भारत ने रूस, अमेरिका, इजराइल ओर यूरोपीय संघ के साथ सैन्य प्रौद्योगिकी समझौते किए है।

अलग सांस्कृतिक पहचान

वर्तमान आधुनिकता से परिपूर्ण भारत यूं ही वैश्विक नेतृत्व की ओर नहीं बढ़ पाता अगर इसका इतिहास इतना सुदृढ़ न होता। एशिया महाद्वीप के अर्न्तगत भारत के कई क्षेत्रों का इतिहास काफी लंबा रहा है। इसका सांस्कृतिक प्रभाव बौद्ध, हिंदु व सिख जैसे धर्मों के दर्शन के कारण फैल गया है। खासकर पूर्वी और दक्षिण पूर्व एशिया में। भारतीय दर्शन अब विदशों में भी फैल चुकी है। इसका प्रभाव हम विश्व योग दिवस के रूप में देख सकते है। ये ही नहीं भारतीयों ने नंबरिंग सिस्टम का भी अस्वीकार किया एवं शून्य, तर्क, ज्यामिति, मूल बीजगणित, गणित, खगोल विज्ञान आदि की भी अवधारणा भारतीयों द्वारा ही विकसित की गई है।

सबसे बड़ी पूँजी : अनेकता में एकता

भारतीय समाज बहु जातीयता, बहुभाषियता और बहुधार्मिकता का पोषक रहा है। उपमहाद्वीप के लंबे और विविध इतिहास ने इसे एक अद्वितीय उदार संस्कृति प्रदान की है जो अक्सर आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है। आजादी के बाद से ही भारत ने अपने विचारों में प्रगतिशील आदर्शों को वापस प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया है, जैसे लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास किंतु शांति वार्ता के साथ आदि। आधुनिक भारतीय

मानसिकता धीमी लेकिन सामूहिक रूप से स्थिर विकास के मार्ग पर अग्रसित हो रहे है। भारतीय जनता अब अपने समाज और मीडिया में आधुनिक पश्चिमी प्रभाव को भी स्वीकार कर रही है और जो सभ्यता उभर रही है वह नई पश्चिमी संस्कृति (सामाजिक वैश्विकरण) के साथ अपनी पिछली स्थानीय संस्कृति का संगम है। कुछ भविष्यवादी सामाजिक विचारकों के मतानुसार, आधुनिकता के साथ विविध प्राचीन संस्कृतियों सभ्यताओं का मेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ आध्यात्मिकता वैश्विक एकता चेतना के विकास के लिए भारत को एक सामाजिक प्रयोगशाला बना रहा है।

इन सबके बावजूद भारत के समक्ष अनेक बाधाएं भी हैं, जो इसके विकास के मार्ग में अवरोध पैदा कर रही हैं। इनमें कुछ प्रमुख है, भारत के अपने पड़ोसी मुल्कों के साथ विविध विवाद, अर्न्तराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व की कमी, गरीबी, बेरोजगारी, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, बुनियादी शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य, कानून व्यवस्था में लचीलापन, पर्यावरणीय समस्याएँ एवं लिंग भेद। वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या जो भारतीय विकास के मार्ग में अवरोध पैदा कर सकती है वह है भारत में महिलाओं की असुरक्षा। एक सर्वेक्षण के मुताबिक भारतीय महिलाओं की स्थिति सऊदी अरब जैसे देश से भी बुरी है ये वे कारण है जिन्हें दूर किए बगैर भारत अपने विकास के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है।

निष्कर्ष

तकनीक हमेशा नवयुग में प्रवेश का माध्यम रही है एवं इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारत अपने विविधता पूर्ण संस्कृति एवं आध्यात्म के साथ विकास के चुहुँदिशि मार्ग पर अग्रसर है। परंतु अभी इसे बहुत सारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रतिस्पर्धात्मक अर्न्तराष्ट्रीय सामरिक परिवेश में भारत को अपनी भूमिका निभनी है। सभी का मानना है कि विश्व भारत को अगली महाशक्ति के रूप में देख रहा है। विश्व के समक्ष भारत ने सिद्ध कर दिया है कि लोकतंत्र और विकास साथ–साथ चल सकते है। भारत में क्षमता की कोई कमी नहीं है जिस दिन भारतीयों ने अपनी योग्यता का सही आकलन कर लिया तो फिर वो दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरू कहलाएगा और हम वैश्विक स्तर पर अपनी ज्ञान–पताका फहराएंगें।

संदर्भ ग्रंथ

1. Energy crisis in india by MG Mehetre.
2. Social Problems in india : BK Prasad.
3. India : An investor's Guide to the next economic superpower by Aaron chaze.
4. इंडिया अनबाउंड : स्वतंत्रता से सामाजिक और आर्थिक क्रांति से वैष्विक सूचना आयु तक Gurcharan Das.
5. द वर्ल्ड इज फ्लैट : बीसबीं शताब्दी के एक संक्षिप्त इतिहासः थामस एल फ्राइडमैन।
6. फरीद जकारिया, दि पोस्ट अमेरिकन वर्ल्ड (मई, 2000)
7. अर्न्तराष्ट्रीय संबंध : प्रो० बी० एल० फड़िया

8. India : the next Economic, Giant, 2004, By Lowy institute, Australia.
9. http://www.india-rising.com
10. https://en.m.wikipedia.org/wiki/india.as. an emerging_superpower.
11. https://www.digitalindia.gov.in/content/ekranti-electronic-delivery-service.
12. http://m.economictimes.com/news/economy/indicators/imf-expects-india-toretainworlds-fastestgrowing.economy.tag/article show/49245651.com
13. https://www.bbc.com/news/world.asia-india-29307123.